P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11*(Part-2) February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

रामदरश मिश्र का व्यक्तित्व और कृत्तित्व

अनिता मीणा
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

साहित्य समाज आधारित होता है, वह समाज में जो घटित अच्छे–बुरे का चित्रण करता है। वह समाज को एक अच्छी सोच व समझ देता है ताकि समाज अपना उत्थान कर सके। और ये सब साहित्यकार के ऊपर भार है कि वह समाज को किस ओर ले जाना चाहता है। एक अच्छे साहित्यकार का व्यक्तित्व एवं व्यवहार समाज को नई दिशा दे सकता है ताकि समकालीन परिवेश में घटित बुराइयों से समाज को ऊँचाईयों तक ले जाया जा सके ताकि वह अपना एवं समाज व देश को सही मार्ग बतला सकें। जो असाधारण व्यक्ति होते है उनकी मृत्यु के पश्चात् भी उनका व्यक्तित्व उनकी कृतियों, विचारों के द्वारा युगों–युगों तक अपनी छाप बनाए रखते हैं। आज भी कबीरदास, जायसी, सूरदास, तुलसीदास, प्रेमचंद, मैथिलीशरण गुप्त, अज्ञेय आदि का हिन्दी साहित्य जगत् में पूरे सम्मान के साथ नाम लिया जा सकता है। आज भी उनका साहित्य अमरत्व है। उसी प्रकार मिश्रजी का साहित्य जगत् में अपने विचारों लेखन एवं व्यक्तित्व और साहित्य साधना द्वारा अपनी कृतियों से हिन्दी साहित्य की सेवा कर रहे है। ऐसे महान् साहित्यकार का व्यक्तित्व जनाना यहाँ अति आवश्यक हो जाता है।

मुख्य शब्द : व्यक्तित्व, परिवेश, कथा साहित्य, कर्मठता।

प्रस्तावना

रामदरश मिश्र एक सशक्त लोकप्रचलित एवं प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार है। ऐसे साहित्यकार का साहित्य परिचय प्राप्त करने से पहले उनके जन्म, व्यक्तित्व, परिवार, शिक्षा का परिचय प्राप्त करना होगा। मिश्र जी ने जीवन को जिस यथार्थ या समकालीन परिवेश में देखा, जाना और समझा है उससे उनके व्यक्तित्व की रेखाएँ स्पष्ट से स्पष्टतर होती गयी है। उनके लिए जीवन कर्म और जिजीविषा का पर्याय है। उनका समग्र कथा साहित्य लेखन से हम उनके व्यक्तित्व को बारीकियों एवं पैनी दृष्टि एवं बौद्धिक क्षमता से जानने का प्रयास करेंगे।

व्यक्तित्व प्रमुख रूप से सामाजिक एवं जैविक घटनाओं से अर्जित होता है। ठीक उसी प्रकार सामाजिक घटक परिवेश व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होते है। पारिवारिक स्थितियों का व्यक्तित्व निर्माण में अमूल्य योगदान तो होता ही है मगर वह सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक शैक्षिक, साहित्यिक, साँस्कृतिक आदि परिस्थितियों से विशेष प्रभावित होता है।

शोध के उद्देश्य

रामदरश मिश्र के व्यक्तित्व की विशेषताओं को इंगित करना तथा उनके कृतित्व पर प्रकाश डालना।

रामदरश मिश्र का जन्म

कथाकार, कवि, साहित्यकार मिश्रजी का जन्म श्रावण पूर्णिमा बरसात के दिनों में राष्ट्रीय दिवस 15 अगस्त, 1924 ई. में गाँव डूमरी जनपद के गोरखपूर में हुआ था। मिश्रजी के जन्म स्थान एवं परिवार के बारे में पुस्तक 'जल टूटता हुआ एक अनुशीलन' में डॉ. परदेशी एवं डॉ. देवरे माली ने भी रेखांकित करते हुए लिखा है कि– "रामदरश मिश्र का जन्म 15 अगस्त, 1924 ई. में रामचन्द्र मिश्र के यहाँ हुआ। उनका परिवार ग्राम डूमरी (गोरखपुर) का मध्यमवर्गीय परिवार था। मिश्र जी के दो बहिन एवं तीन भाई थे।"[1]

पारिवारिक परिचय

मिश्रजी के पिता का नाम 'श्री रामचन्द्र मिश्र' था। वे अपने पिता के इकलौते वारिस थे। अच्छा खाना, अच्छा पहनना, घूमना–घामना, मेले–ढेले जाना, हाट–बाजारों में जाना, रिश्तेदारियों, बारात, चौपाल और रामायण के धार्मिक गाने गाना यही उनकी दिनचर्या थी। इन सभी लक्षणों को निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है– "उनके पिता श्री रामचन्द्र मिश्र सैलानी प्रवृत्ति के थे। गाना–बजाना और घूमने का उन्हें बहुत शौक था। वे अच्छे बैठक बाज थे। ग्रामीण–सुलभ

सहजता और भोलेपन उनकी विशेषता थी।"[2] इतना ही नहीं मिश्रजी के पिताजी एक अच्छे संगीतज्ञ एवं बैण्ड बाजक थे। वे कठिन परिश्रम एवं ईमानदारी के साथ किसी कार्य को करने में गहरी रूचि लेते थे। किसी के घर विवाह या कोई भी त्यौहार हो वे महिलाओं से साथ ताल–मेल मिलाते स्वरीले स्वर में अच्छा गाते इसका चित्रण इन पक्तियों में देखा जा सकता है– "गीत और संगीत में रूचि होने के कारण उन्होंने सांस्कृतिक आयामों में गाँव की महिलाओं का नेतृत्व किया। चाहे पूजा–पाठ हो, शादी–ब्याह या पर्व–त्योहार हर जगह उन्होंने सरल रूप का परिचय दिया।"[3] मिश्रजी की माँ का नाम 'कंवलपाती' था वे बहुत कर्मठ और परिश्रमी महिला थी। वे पिताजी की तरह धार्मिक प्रवृत्ति की थी। उनमें कर्म और संगीत का अद्‌भुत समन्वय था। वे संगीत के क्षेत्र में निपुण थी इसलिए अपने गाँव–मोहल्ले में इज्जत की पात्र थी। मिश्रजी के लिए माँ आज भी आदरणीय एवं सम्मानीय है। माँ की छवी जो उनके बचपन में छप चुकी थी; आज भी वह बरकरार है। माँ की कर्मठता ने सास के अत्याचार सहजता से झेले थे। न के बराबर आमदनी में भी वे घर को सहजता से चला लेती थी। पति के सैलानी स्वभाव के कारण उन्हें बहुत कुछ गृहस्थी का बोझ झेलना पड़ा है। सामाजिक एवं साँस्कृतिक दोनो क्षेत्रों में वे अपनी काबिलियत प्रस्थापित कर चुकी थी। मिश्रजी के परिवार में माता–पिता, दो भाई और दो बहिने थी। उनके बड़े भाई का नाम 'रामअवध मिश्र' था। वे घर की गरीबी के अभिशाप से अंत का संघर्ष करते रहे। अपनी मेहनत के बल पर घर को गरीबी के अभिशाप के मुक्त किया। वैसे पिता श्री के बाद घर में बड़े भाई की जिम्मेदारी बन जाती है कि वह अपने परिवार का भरण–पोषण करें, कुछ ऐसा ही 'रामअवध मिश्र' ने किया यथा– "बहुत प्रवीण छात्र होने पर भी मिडिल पास करने के बाद घर के आर्थिक दैन्य के कारण नौकरी करनी पड़ी।"[4]

रामदरश मिश्र के विराट व्यक्तित्व के पीछे जिसकी परछाई है वह है, उनकी सहधर्मिणी श्रीमती सरस्वती जी। सरस्वती जी ने अपने आप में एक कर्मठ नारी अपने–आप में घर–परिवार के साथ जोड़ उन जिम्मेदारियों को स्वयं संभाल कर मिश्रजी को मुक्त रखती है। मिश्रजी के व्यापक रचना संसार का मूल सरस्वती के मोन–कर्म में छिपा है। सरस्वती जी विवाह से लेकर आज तक परिवार की जरूरतों को पूर्ण करने में ही अपने–आप को व्यस्त रखती है। इनके इसी स्वभाव को देखकर गुप्त जी की पंक्तियाँ अनायास ही याद आती है यथा–

"बाहर चूर–चूर होकर नर, बहुधा घर आता है।
नारी का मुख वहाँ निरखा, वह फिर नवलता पाता है।"[5]

पुरूष के व्यक्तित्व को निखारने एवं उसे आगे बढ़ाने में उनके उत्थान एवं विकास करने में गृहणी की अहम भूमिका रहती है। मिश्रजी के व्यक्तित्व को सँवारने एवं अपने कर्त्तव्यों का बोध कराने में उनकी पत्नी का बड़ा हाथ है। कहा भी जाता है कि घर को सही मायने में दिषा देने का कार्य घर की गृहणी का होता है। वह जैसे चाहे अपने आसियानें को सम्भाल सकती है और घर में शांति व सह–अस्तित्व की भावना का विकास कर सकती है। मिश्र जी स्वयं इस बात के साक्षी है, वे पत्नी (सरस्वती) की प्रशंसा करते नहीं थकते है, उन्हीं के शब्दों में–"मुझे ऐसी पत्नी मिली जो निहारत कर्मठ और मानवीय संवेदना युक्त है, जिसके नाते में निश्चय होकर इतना कुछ लिख–पढ़ सका और मेरे मन में निरन्तर एक स्नेह संवेदना का भराव होता रहा है।"[6] मिश्रजी मूलतः ग्रामीण संस्कृति के पोषक कहे जा सकते हैं। वे सादे–आदमी हैं। खाने–पीने, पहनने–ओढ़ने में सादगीपूर्ण रहे हैं। इसी प्रकार ग्रामीण परिवेश की पोषक उनकी धर्मपत्नी थी। वे आधुनिक चकाचौंध से दूर ग्रामीण परिवेश एवं खाने–पीने को महत्व देते है। पत्नी ने हमेशा देशीयत को बढ़ावा देन का प्रयास किया है अर्थात् वह भी अपने बच्चों एवं परिवार में सादे ओढ़ने, पहनने को महत्व देती रही है। इसका पता हमें इन पंक्तियों से चलता है– "मैंने अपने परिवार को जो एक देशी संस्कार देना चाहा, उसे देने में सफल रहा, यानी हमारे बच्चे महानगर में रहते हुए भी आधुनिकतावाद की चकाचौंध में नहीं फंसे है और हमारे परिवार में आधुनिकता, अकेलापन या अजनवीयन जैसी कोई चीज नहीं है। पूरे परिवार में मैत्री, खुलापन है, छोटे–बड़े का कोई आतंक नहीं है।"[7] मिश्र के परिवार मैं दाल–बाटी, रोटी–सब्जी, चटनी खासकर अरहर की दाल आदि देशी व्यंजनों को बनाने में पत्नी की गहरी दिलचस्पी थी। हम पॉच सितारा होटल में खाना खाने जाते तक भूखे रहने तक की नौबत आ जाती। किसी ढाबे पर भूख शांत करते या घर पर ही अपने रोज के व्यंजनों का आनंद लेते थे। वैसे घर में अनाज की मिठाइयाँ, देशी दुध, गाय का दही, चावल के लड्डू तथा गन्ने का रस, लस्सी आदि में गहरी दिलचस्पी थी। तभी तो देशीयत के साथ सादगीपूर्ण व्यवहार अर्थात् परिवार के सदस्यों का मैत्रीपूर्ण व्यवहार ने एक साहित्य जगत को मिश्रजी जैसे कमल के फूल को जन्म दिया। जिन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बल पर अमृत्व को प्राप्त हो गये। भारतीय संस्कृति के विशिष्ट तत्वों और परिवार के मैत्रीभाव से उनका साहित्य निखर पाया है। इसका पता हम इन पंक्तियों से आसानी से लगा सकते है– "एक तंदुरस्त परिवार औार आदर्श पत्नी के साहाचार्य से मिश्रजी का साहित्यिक व्यक्तित्व निखर उठा है। परिवार के मैत्रीभाव और खुलेपन ने उनके व्यक्तित्व के अनेक आयाम खोल दिये। भारतीय संस्कृति के संस्कार उनके परिवार का गहना है। परिवार प्रेम के चिंतन से मिश्र जी जैसे फूल ही खिल सकते है।"[8]

मिश्रजी की पत्नी सरस्वती ने अपने माता–पिता की प्रशंसा करते हुए बताया है कि पिता की सही सोच के मायने ही मुझे इतने सच्चे, सादगीपूर्ण कथाकार, साहित्यकार के साथ–साथ सत्यनिष्ठा एवं परिवार के प्रति पूरी निष्ठा रखने वाले पति मिले है। इन बातों से ही पता चलता है कि मिश्रजी का व्यक्तित्व उच्च कोटि का था तभी पत्नी के मुख से इस प्रकार के अमरत्व शब्दों का प्रयोग हुआ है यथा– "मैं कितनी भाग्यशाली हूँ कि मुझे कवि और लेखक होते हुए भी एक जिम्मेदार–सीधा और प्यारा पति मिला है, जो सही मायने में इन्सान है।"[9] वैसे मिश्रजी के व्यक्तित्व पर गाँव की मिट्टी एवं परिवेश से सम्बन्ध रहा है। उनकी व्यापक रचनाओं का बीज गाँव की मिट्टीयाँ में बोया है। जिसका फल आज हिन्दी साहित्य

चख रहा है। अति संवेदनाशील, भावनात्मक, उत्साही, निश्चल एवं सरल व्यक्तित्व के धनी मिश्र जी हिन्दी जगत् के श्रेष्ठ सितारों में एक है। उनके ग्रामीण परिवेश के बारे में ये पंक्तियाँ देखी जा सकती है यथा–

"मैं गमले का फूल तो नहीं कि
कमरे में रख दिया जाऊँ,
मैं तो पेड़ हूँ एक खास जमीन में उगा हुआ,
आँधियाँ आती है, लुएँ चलती है, ओले गिरते है,
पेड़ हर–हराता है, कांपता है,
डालियां और फूल टूटते है,
लेकिन वह हर बार अपने में लौट आता है।"[10]

इस प्रकार समग्र रूप से देखा जाए तो मिश्र के व्यक्तित्व पर परिवार में माता–पिता एवं बड़े भाई, पत्नी, मँझले भाई–बहनों का अपार प्रेम–स्नेह उन्हें मिला जिसके बलबूते मिश्र जी साहित्य में अपनी व परिवार के लोगों के व्यक्तित्व की छाप छोड़ गये

मिश्र जीः शिक्षा एवं अध्यापन कार्य

"मिश्र जी की प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा किशनपुरा में हुई। सन् 1938 में चौदह वर्ष की अवस्था में उन्होंने माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण की थी।"[11] ऐसा कहा जाता है कि तत्कालीन समय में मिश्र जी के गाँव डूमरी में उस समय स्कूल नहीं था तो पास के गाँव किशनपुरा में उन्होंने प्रथम दाखिला लिया और वहाँ से माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा ग्रहण की थी। "सन् 1939 में उर्दू की माध्यमिक परीक्षा देकर 'ढरसीग्राम' से विशेष योग्यता अर्जित की। सन् 1943 ई. में उन्होंने 'साहित्य रत्न' किया।"[12] जैसा कि ऊपर वर्णित किया जा चुका है कि बच्चों की प्रथम पाठशाला उसका परिवार होता है।

मेहनत, लग्न और विश्वास के साथ पहले विशारद और बाद में साहित्यरत्न भी पास कर लिया। शिक्षा यात्रा को आगे जारी रखते हुए विशेष अध्ययन हेतु वे बनारस चले गये। वहाँ केम्ब्रिज अकादमी में प्राइवेट स्कूल में मैट्रिक पास की। इस सिलसिले को जारी रखते हुए सन् 1948 ई. में बनारस की हिन्दू विश्वविद्यालय में इण्टर पास किया। तत्पश्चात् सन् 1950, 1952, 1957 में क्रमशः बी.ए., एम.ए. तथा पी.एचडी. की डिग्री प्राप्त की, जीवन के इस स्वर्णकाल में 10 वर्ष उन्होंने बनारस में बिताये। बनारस के माहौल में जैसे एक भावी साहित्यकार की भूमिका तैयार हो चुकी थी।"[13] अहमदाबाद में लगभग पांच साल रूकने के पश्चात् मिश्र ने नयी उड़ान हेतु प्रयास किया और आखिरकार वे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में 10 अगस्त, 1964 ई. के दिन पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज में कार्यरत हो गये। सन् 1964 से 1969 तक वहीं रहे। मनुष्य को अपनी लगन एवं कड़ी मेहनत का फल अवश्य मिल जाता है। सन् 1969 में दिल्ली युनिवर्सिटी में स्थान बनाने में कामयाब हो गये। सन् 1971 ई में रीडर हुए पर मिश्रजी को उससे भी आगे बढ़ना था। 1983 ई. में 'प्रोफेसर' का सम्मानजनक पद प्राप्त हुआ और 1990 में उन्होंने पद से अवकाश ग्रहण कर लिया था यथा– "सन् 1971 में रीडर हुए पर मिश्रजी को तो और आगे बढ़ना था। वे सन् 1983 में प्रोफेसर हुए और दिल्ली विश्वविद्यालय में ही अपने अध्यापन कार्य का अन्तिम चरण पूरा किया। सन् 1990 में प्रोफेसर के पद से अवकाश ग्रहण किया।"[14] लम्बे अरसे की अध्यापन यात्रा मिश्र को कभी यादों के गोतों में डूबो देती है।

रामदरश मिश्रः कृत्तित्व

साहित्य जगत् के प्रमुख कवि महावीर प्रसाद ने कहा था कि–साहित्य समाज का दर्पण है। यह सर्वविदित है साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब तभी बन सकता है जब साहित्यकार द्वारा साहित्य में समाज के दुःख–दर्द, पीड़ा आदि का सच्चे हृदय या मन से चित्रण हो। अन्यथा वह साहित्य लम्बी कालावधि तक जीवित नहीं रह सकता। मिश्र जी के साहित्य की पृष्ठभूमि गाँव की पावन धरा से शुरू होकर शहर की चकाचौंध भरी जीवन शैली से होकर निरन्तर आगे बढ़ते हुए अनेक विधाओं में उन्होंने अपनी मन की पीड़ाओं, दुःख–सुख आदि का विभिन्न विधाओं के माध्यम से पाठक वर्ग के सामने प्रस्तुत किया है। उन्होंने साहित्य जगत् को अनेक विधाएं एवं रचनाएं की है जिससे उनका जीवन अमरत्व को प्राप्त हो सका है। यथा– "रचनाकार रामदरश मिश्र बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। यद्यपि उनकी पहचान एक कथाकार एवं कवि के रूप में उभरकर आई है, फिर भी साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपनी रचना–धर्मिता की पहचान उन्होंने स्थापित की है।"[15] उनका व्यापक रचना–संसार का बीज गाँव की पृष्ठभूमि की मिट्टी रही है। मिश्र की साहित्य हित के साथ लिखा गया है। वह दूसरों की भलाई पर आधारित है।

मिश्रजी ने साहित्य की विविध विधाओं में अपनी कलम चलायी और साहित्य के भण्डार में वृद्धि की है यथा– "आज मिश्र जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। इन्होंने कथा, उपन्यास, कहानी, आलोचना, निबंध, आत्मकथा आदि सभी क्षेत्रों में अपनी लेखनी चलायी है। यद्यपि मिश्र जी की काव्य के प्रति विशेष अभिरूचि रही है। लेकिन जो सफलता उन्हें कथाकार के रूप में मिली है, वह अन्य क्षेत्र में नहीं।"[16] इस प्रकार मिश्रजी को हिन्दी के कथाकार के रूप में अपार समृद्धि एवं सम्मान मिला है। उन्होंने कथा साहित्य की ओर उनका रूझान या झुकाव अधिक रहा है। इन्हीं कारणों के फलस्वरूप उन्हें एक हिन्दी का सफल कथाकार की संज्ञा दी जा सकती है।

मिश्रजी की सृजनात्मक कृतियाँ निम्न है–

उपन्यास साहित्य

अनुक्रम	उपन्यास	प्रकाषन वर्ष
1.	पानी के प्राचीर	1961
2.	जल टूटता हुआ	1969
3.	बीच का समय	1970
4.	सूखता हुआ तालाब	1972
5.	अपने लोग	1976
6.	रात के सफर	1976
7.	आकाश की छत	1979
8.	आदिम राग	1982
9.	बिना दरवाजे का मकान	1984
10.	दूसरा घर	1986
11.	थकी हुई सुबह	1994
12.	बीस बरस	1996
13.	परिवार	2006
14.	बचपन भास्कर का	2010

कहानी संग्रह

अनुक्रम	कहानी संग्रह	प्रकाशन वर्ष
1.	खाली घर	1968
2.	एक वह	1974
3.	सर्प दंश	1972
4.	दिनचर्या	1979
5.	वसन्त का एक दिन	1982
6.	इकसठ कहानियाँ	1984
7.	मेरी प्रिय कहानियाँ	1990
8.	अपने लिए	1992
9.	चर्चित कहानियाँ	1992
10.	श्रेष्ठ आंचलिक कहानियाँ	1995
11.	आज का दिन	1996
12.	एक कहानी लगातार	1997
13.	फिर कब आयेंगे	1997
14.	अकेला मकान	1999
15.	विदूषक	2002
16.	दिन के साथ	2002
17.	विरासत	2006
आत्मकथा		
1.	सहचर है समय	1981
2.	खण्ड–1 जहाँ मैं खड़ा हूँ	1984
	खण्ड–2 रोशनी की पगडंडिया	1984
	खण्ड–3 टूटते बनते दिन	1989
	खण्ड–4 उत्तर पथ	1999
3.	फुरसत के दिन	2001
संस्मरणः		
1.	स्मृतियों के छंद	1994
2.	अपने–अपने रास्ते	2002
यात्रा वर्णन		
1.	तना हुआ इन्द्रधनुष	1989
2.	भोर का सपना 1993	
3.	खण्ड–1 पड़ोस की खूशबू (यात्राएँ)	1999
	खण्ड–2 पड़ोस की खूशबू (व्यक्तित्व)	1999
साक्षात्कार		
1.	अतरंग (साक्षात्कार)	1999
2.	मेरे साक्षात्कार 2008	

निष्कर्ष

इस प्रकार मिश्र जी के रचना–संसार पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट हो जाता है कि उनकी साहित्य सम्पदा बहुआयामी है अर्थात् प्रत्येक विद्या में उन्होंने अपनी सिद्धहस्त कलम चलाई बहुमुखी प्रतिभा के धनी मिश्रजी के समग्र साहित्य का रसास्वादन एवं मूल्यांकन द्वारा उनके साहित्य की मूल्यवर्धिता एवं श्रेष्ठता को उनका व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व कई सम्मानों तथा पुरस्कारों से अभिनंदित हुआ है। उनके इस व्यक्तित्व में गांधी जी की सादगीपूर्ण रहन–सहन एवं उच्च विचारणीय और ग्रामांचल के साथ एक लगाव तथा आत्मीयता परिलक्षित होती है। मिश्र जी के कृत्तित्व के अन्तर्गत उनके उपन्यास, कहानी संग्रह, कविता संग्रह, निबंध–संग्रह, सस्मरण, आत्मकथा, साक्षात्कार, समीक्षात्मक ग्रन्थ, सहयोगी कृत्तियाँ, अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित ग्रन्थों का परिचय दिया गया है।

अंत टिप्पणी

1. *जल टूटता हुआ एक अनुशीलन–डॉ. परदेशी, डॉ. देवरे माली पृ.स.10*
2. *टूटता हुआ एक अनुशीलन–पृ. सं. 14 डॉ. परदेशी*
3. *टूटता हुआ एक अनुशीलन–पृ. सं. 10 डॉ. परदेशी*
4. *रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण एवं नगरीय जीवन– डॉ. बेबी कोलते पृ.स.10*
5. *गुप्त और उनकी सुकितर्या–संपादक–शरण पृ.स.52*
6. *कहानीकारः रामदरश मिश्र– डॉ. अमी दवे, पृ.स.16*
7. *कहानीकारः रामदरश मिश्र– डॉ. अमी दवे, पृ.स.16*
8. *कहानीकारः रामदरश मिश्र– डॉ. अमी दवे, पृ.स.16*
9. *रामदरश मिश्र की कहानियों में युगीन समस्याएँ– डॉ. आवचार दीपाली 77*
10. *रामदरश मिश्रः व्यक्तित्व एवं अभिव्यक्ति–जगत सिंह/डॉ.स्मिता–27*
11. *जल टूटता हुआ एक अनुशीलन– डॉ. परदेशी एवं माली पृ.स.10*
12. *जल टूटता हुआ एक अनुशीलन– डॉ. परदेशी एवं माली पृ.स.10*
13. *कहानीकारः रामदरश मिश्र– डॉ. अमी दवे, पृ.स.17*
14. *कहानीकारः रामदरश मिश्र–डॉ. अमी दवे, पृ.स.19*
15. *रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण एवं नगरीय जीवन–डॉ. बेबी कोलते 18*
16. *रामदरश मिश्र की कहानियों में युगीन समस्याएँ–डॉ. आवचार दीपाली–90*